# हस्त-पत्रक 2/2

## कंचा

प्रस्तुत पाठ एक आंचलिक कहानी है जिसके लेखक टी पद्मनाभाम जी है। हमारे समाज में सभी वर्गो निम्न, मध्यम और उच्च स्तर के लोग रहते है। निम्न स्तर के गरीब लोग मध्यम और उच्च स्तर के लोगो खेल की बराबरी करना चाहते है परंतु धनाभाव के कारण वे अपनी इच्छाओं को दबाकर रह जाते है। यहाँ एक अप्पू नाम के गरीब बच्चे की मर्म स्पर्शी कहानी है जो अपने स्कूल की फीस से ही कंचे खरीद लेता है। प्रेमचंद की ईदगाह कहानी में भी एक ऐसे हामिद नाम के बच्चे की भावुक कहानी है जो अपने खिलौने खरीदने के पैसों से चिमटा खरीद लेता है क्योंकि उसकी दादी के हाथ रोटी बनाते समय जल जाते है। आज इस गरीबी-अमीरी के अंतर को मिटाने कि आवश्यकता है। अमीरों को चाहिए कि गरीबों की भलाई के लिए कार्य करें। सरकार को भी ऐसे कदम उठाने चाहिए जिससे गरीबों के बच्चे भी शिक्षा पा सके तथा अपने इच्छित खिलौनों से खेल सके। यहाँ हामिद और अप्पू की विचार धारा में थोड़ा अंदर दिखाई दे रहा है। एक तरफ अप्पू है जिसकी माँ गरीब है। वह अप्पू को स्कूल की फीस भरने के लिए पैसे देती जिससे वह कंचे खरीद लेता है तथा दूसरी तरफ समझदार हामिद अपने पैसों से चिमटा खरीद लेता है क्योंकि वह देखता था कि रोटी बनाते समय उसकी दादी के हाथ जल जाते है। आज आवश्यकता इस बात कि है कि बच्चे समझदार, संवेदनशील एवं विवेकशील बने तथा अपने घर की स्थिति को समझकर पढे, लिखे तथा खेलें।

## पाठ का सार

**मास्टर जी द्वारा सचेत करना :-** मास्टर जी भले ही पाठ समझाते जा रहे थे लेकिन अप्पू न जाने कहाँ खोया हुआ था | उसे तो वही कंचे याद आ रहे थे | सोच रहा था कि की जॉर्ज ठीक हो जाए तो उसके साथ खेलेगा | मास्टर जी उसके चेहरे से पहचान गए कि अप्पू का ध्यान पढाई में नहीं है | वे उसके पास गए और पूछना चाहा कि वे क्या पढ़ा रहे हैं ? वह अचानक बोल उठा - 'कंचा' | कक्षा के सभी बच्चे हैरान थे कि यह क्या हुआ | मास्टर जी क्रोधित हो उठे | अप्पू बैंच पर खड़ा हो गया लेकिन उसका ध्यान अभी भी कंचों में ही था | पाठ समाप्त हो गया | बच्चे पाठ से सम्बंधित कठिनाइयाँ मास्टर जी से पूछने लगे लेकिन अप्पू तो इस सोच में खोया था कि कंचे कैसे ख़रीदे जाएँ | क्या जॉर्ज को साथ ले जाने पर दुकानदार कंचे देगा ? या आएँगे कितने के ? पाँच पैसे के या दस पैसे के | मास्टर जी ने उससे पूछा -'क्या सोच रहे हो?' तो उसके मुँह से निकला -'पैसे' | मास्टर जी ने पूछा पैसे

किसके लिए चाहिए, क्या रेलगाड़ी के लिए? वह बोला -'रेलगाड़ी नहीं कंचा' | चपरासी के कक्षा में आने के कारण मास्टर जी ने उसके इस उत्तर का जवाब न दिया |

**चपरासी का फीस हेतु आना :-** चपरासी ने कक्षा में मास्टर जी को एक नोटिस दिया | मास्टर जी नोटिस पढ़कर कहने लगे कि जो फीस लाए हैं वे ऑफिस में जमा करवा दें | सब बच्चों के साथ , राजन के सचेत करने पर अप्पू भी फीस जमा करवाने जाने लगा | पहले तो मास्टर जी ने मना किया परन्तु बाद में जाने दिया |

**अप्पू का कंचे खरीदना :-** उसने फीस न जमा करवाई, जबकि पिताजी ने उसे एक रुपया पचास पैसे दिए थे | उसके दिमाग में तो कंचे घूम रहे थे | सभी बच्चों ने फीस जमा करवा दी लेकिन अप्पू ने फीस जमा नहीं करवाई | जब वह घर जा रहा था तो उसकी चाल की तेजी बढ़ी वह उसी दुकान पर आकर रुका | दुकानदार उसे देखकर हँसा और बोला - 'कंचा चाहिए न ?' उसने सिर हिला दिया | दुकानदार ने कहा -'कितने कंचे चाहिए?' उसने जेब से एक रूपए पचास पैसे निकाले तो दुकानदार चौंक गया इतने सारे पैसे | साथ ही दुकानदार ने अपने-आप में यह आशंका भी लगा ली कि सब साथियों के मिलकर ले रहा होगा | दुकानदार से कंचे लेकर कागज की पोटली छाती से चिपकाकर आगे बढ़ने लगा |

**कंचों का बिखरना :-** उसने अपने कंचे देखने चाहे कि सब में लकीरें हैं या नहीं | पोटली खोलते ही सारे कंचे बिखर गए | वह झट से उठाकर एकत्रित करने लगा हथेली भर गई अब उसने बस्ते में रखने चाहे | अचानक ही सामने से कार आ गई | ड्राइवर गुस्सा खा रहा था कि उसने रास्ता रोका हुआ है लेकिन वह हँसकर ड्राइवर को भी कंचा दिखाने लगा तो ड्राइवर का गुस्सा भी उसके प्रति प्रेम में बदल गया |

**माँ का कंचे देखना :-** वह आज घर देर से पहुँचा तो माँ कुछ परेशान थी लेकिन वह खेल-खेल में माँ की आँखें बंद कर उसे कंचे दिखाने लगा | माँ ने पूछा कि इतने सारे कंचे कहाँ से लाया तो उसने सच बताया कि पिताजी द्वारा दिए गए पैसों से खरीदे हैं | पहले तो माँ हैरान रह गई कि उसने यह क्या किया लेकिन वह उससे बहुत प्रेम करती थी | उसे कुछ कहना भी नहीं चाहती थी | उसके दिमाग में एक बात कौंध गई कि कंचे किसके साथ खेलेगा | उसे अपनी मरी हुई बच्ची की याद आ गई और वह रोने लगी | अप्पू को लगा कि माँ को कंचे पसंद नहीं आए वह कहने लगा - "माँ! ये कंचे बुरे हैं न!" लेकिन माँ कहने लगी नहीं, अच्छे हैं | वह हँस पड़ा | माँ भी हँस पड़ी | माँ ने उसे गले लगा लिया क्योंकि वह सदा उसे खुश देखना चाहती थी |

**लघु उत्तरीय प्रश्न**

(क) कंचे खरीदने में अप्पू किसकी मदद लेना चाहता है और क्यों ?
उत्तर-
कंचा खरीदने में अप्पू जॉर्ज की मदद लेना चाहता है। जॉर्ज कंचों के खेल का सबसे अच्छा खिलाड़ी माना जाता है। उसे कोई हरा नहीं पाता। जॉर्ज हारे हुए खिलाड़ी की बंद मुट्ठी के जोड़ों की हड्डी को तोड़ देता है।

(ख) अप्पू के कंचे सड़क पर कैसे बिखर गए?
उत्तर-
दुकानदार ने कागज की पोटली में बाँधकर कंचे उसे दे दिए। जब वह पोटली छाती से लगाए जा रहा था तो उसने देखना चाहा कि क्या सभी कंचों पर लकीरें हैं। बस्ता नीचे रखकर जैसे ही उसने पोटली खोली तो सारे कंचे सड़क पर बिखर गए।

(ग) कंचे कैसे थे?
उत्तर-
कंचे का आकार बड़े आँवले जैसा था और वे गोल और सफ़ेद थे। उनमें हरी लकीरें थीं। वह देखने में बहुत सुंदर लग रहे थे।

**दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

(क) कहानी में अप्पू ने बार-बार जॉर्ज को याद किया है? इसका क्या कारण था?
उत्तर-
जॉर्ज कंचे का अच्छा खिलाड़ी है। वह अप्पू का सहपाठी था। चाहे कितना भी बड़ा लड़का उसके साथ कंचा खेले, उससे वह हार जाएगा। हारे हुए खिलाड़ी को अपनी बंद मुट्ठी जमीन पर रखनी पड़ती थी। तब जॉर्ज कंचा चलाकर बंद मुट्ठी के जोड़ों की हड्डी तोड़ता है। अप्पू सोचता है कि जॉर्ज के आते ही वह उसे लेकर कंचे खरीदने जाएगा और उसके साथ खेलेगा। अप्पू की इस सोच के पीछे शायद यह कारण था कि जॉर्ज के साथ रहने से उसे हार का सामना नहीं करना पडेगा। इतना ही नहीं, वह सोचता है कि जॉर्ज के साथ रहने पर कक्षा में उसका कोई हँसी नहीं उड़ाएगा। इसके अलावे वह जॉर्ज के अतिरिक्त किसी को खेलने नहीं देगा।

**मूल्यपरक प्रश्न**

(क) क्या आपको कंचे अच्छे लगते हैं? क्या आप उनसे कभी खेले हैं?

उत्तर-

हाँ, हमें भी कंचे अच्छे लगते हैं, खासकर रंगीन धारियों वाले। बचपन में मैं तरह-तरह के कंचे एकत्रित करता था। बचपन में हमें बच्चों के बीच कंचा खेलना अच्छा लगता था।